www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2023) वर्ष 3, अंक 1, 7-9

Article ID: 247

चने की पैदावार को प्रभावित करते कीट

रत्नाकर पाठक*, डॉ. उमेश चंद्र**

*शोध छात्र, **सहायक प्राध्यापक
कीट विज्ञान विभाग,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

भारत एक कृषि प्रधान देश हैं , यहां निरंतर कृषि में सुधार के नए प्रयोग होने से विभिन्न प्रकार की फसलें ऊगाई जाती है, जिनमें दलहन वर्ग की फसलों का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं ।चना रबी मौसम की प्रमुख दलहनी फसल है यानी चना एक शुष्क और ठंडी जलवायु वाली फसल है। चने की फसल को सरसों, गेहूं, जौ, अलसी के साथ भी बोया जाता है । चने की फसल में कीट के प्रकोप होने से पैदावार प्रति हेक्टेयर कम होती जा रही है । खेती के तरीकों में सुधर को अपना कर एवं फसल के उचित प्रबन्धन द्वारा कीटों से बचाकर उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है । कच्चे रूप में इसकी फलियों को भुनकर खाया जाता है।इसके अलावा इसकी कच्ची पत्तियों का इस्तेमाल सब्जी, चटनी और रोटी बनाने में किये जाता है । पोषण की बात करें तो 100 ग्राम अनाज में औसतन 11 ग्राम पानी, 21.1 ग्राम प्रोटीन , 4.5 ग्राम वसा , 61.65 ग्राम कार्बोहाइड्रट और 149 मिलीग्राम होता है। कैल्सीअम 7.2 मिलीग्राम Iron, 0.14 मिलीग्राम रायइबोफ्लेविन और 2.3 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है।

प्रमुख कीट

चने की फसल में लगने वाले कीट कुछ एस प्रकार हैं -

1. चने का कटुआ कीट-

चने के कटुवा कीट का प्रकोप उन जगहों पर जायद देखने को मिलते है ,जहां जल भराव की समस्या बहुत ज्यादा है इस कीट की लार्वा मटमैले रंग की होती है। लार्वा चिकनी एवं लिजलिजी होती है, पौधे को भूमि की सतह से थोड़ा ऊपर काटकर गिरा देती है, ढूँढने पर यह गिडारें कटे हुए पौधों एवं शाखाओं के पास ही ढेलों के नीचे छिपी मिलेगीं । चने की फसल पर उनका प्रकोप नवम्बर से फरवरी माह तक रहता है।

कटुवा कीट

रोकथाम –

1) ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करनी चाहिए।
2) खेत में जगह जगह घँसो के ढेर लगा देना चाहिए, जिससे कीट की लार्वा उसमे छुप जाते है और सुबह के वक्त सबको नष्ट कर देना चाहिए।
3) फसल चक्र अपनाएं।
4) अगेती बुआई अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में करें।
5) मेड़ पर गेंदा उगाएं।
6) वयस्क कीटों को लाइट ट्रैप द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है ।
7) रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग तभी करें जब कीटों की आबादी आर्थिक सीमा को पार कर जाए।

एंडोसल्फान 35 ईसी @ 1000 मिली/हेक्टेयर या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @ 750 मिली/हेक्टेयर या क्विनालफॉस 25 ईसी @ 1000 मिली/हेक्टेयर की दर से कीटनाशकों का छिड़काव करें।

2. फली बेधक कीट-

चने का फली छेदक कीट का वैज्ञानिक नाम हेलिकोवरपा आर्मीजेरा है। यह एक सर्वभक्षी कीट एवं सर्वव्यापी नाशीकीट है। यह चने का सर्वाधिक हानि पहुँचाने वाला कीड़ा होता है । इस कीट का लार्वा ही फसल को सबसे ज्यादा नुकसान पहुचाती है। लार्वा फली के अन्दर दानों को कुतरकर खाती है। लार्वा के शरीर का लगभग दो-तिहाई भाग फली के बाहर लटकता रहता है । चने की फलियों के अतरिक्त यह पत्तियों, फूलों तथा कलियों को भी सामान्य रूप से हानि पहुंचाती है । एक लार्वा 30 से 40 फलियों को नष्ट करती है। लार्वा पूरे साल किसी न किसी फसल को जैसे अरहर, कपास, सूरजमुखी, मक्का, मूंगफली, टमाटर, इत्यादि पर अपना जीवन चक्र पूर्ण करती है । पूर्ण विकसित लार्वा लगभग 4 सेमी० लम्बी एवं पीलापन लिए हरे रंग की होती है। रंग सामान्यतः खाए जाने वाली फसल के रंग के पर भी निर्भर करता है।

चने का फली बेधक इस कीट

रोकथाम –

1) पक्षी बसेरा की स्थापना करना।
2) 2उपर्युक्त में किसी एक कीटनाशक जैसे -इमामेक्टिन बेंजोएट (220 ग्राम/हेक्टेयर) + इंडोक्साकार्ब (30 ग्राम/हेक्टेयर) या एनएसकेई (25 किग्रा/हेक्टेयर) + इंडोक्साकार्ब (30 ग्राम/हेक्टेयर) या ब्यूवेरिया बेसियाना (400 ग्राम/हेक्टेयर)+ इंडोक्साकार्ब (30 ग्राम/हेक्टेयर) के मिश्रण का छिड़काव करें।
3) एनपीवी @ 250 एल.ई. /एकड़ का छिड़काव करें, छिड़काव के समय 0.1% टीपोल और 0.5% गुड़ मिलाएं।

3. दीमक-

इसका प्रकोप फसल की बुवाई के पश्चात शुरू हो जाता है, और पकने तक लगा रहता है। दीमक जड़ों और तने में छेद कर देता है। बोर के कारण पौधे जल्द ही सूख जाते हैं।विशेष रूप से सूखे के दौरान खड़ी फसल पर भी हमला जारी रह सकता है।

रोकथाम –

1) खेत की सफाई, फसल के अस्तबल और अविघटित पौधों के हिस्सों का समय पर निपटान आवश्यक रूप से सुनिश्चित करें ।
2) दो-तीन गहरी जुताई से भी इस कीट को नियंत्रित किया जा सकता है।
3) रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग केवल तभी करें जब कीटों की आबादी आर्थिक सीमा स्तर (ईटीएल) को पार कर जाए।
4) बुवाई से पहले मिट्टी में क्लोरपाइरीफॉस या कार्बोफ्यूरान ग्रेन्यूल्स 4 किग्रा/एकड़ की दर से डालें।

4. चने का सेमीलूपर-

इस कीट का प्रकोप फूल और पत्तियां बनते वक्त होता हैं ,तथा इस कीट की सूडी पत्तियों एवं फलियों को खाकर हानि पहुंचती है। सूडी हरे रंग की होती है। सूडी चलते समय कूबड़ की आकृति बनती है।जब 2 सूडी प्रति 10 पौधों पर दिखई दे तो नियंत्रण के उपाय करना चाहिए ।

रोकथाम –

1) समय से बुवाई करनी चाहिए|
2) छिट फुट बुवाई नहीं करनी चाहिए|
3) फूल एवं फल बनते समय के दौरान निरक्षण करना अनिवार्य है|
4) क्विनालफॉस 25 ईसी @ 1000 मिली/हेक्टेयर।